श्रीमद् आद्य शङ्कराचार्य कृत

प्रश्नोत्तर रत्नमालिका

हिन्दी अनुवाद : सागर पित्रोडा

प्रश्नोत्तर रत्न मालिका

श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी की रचना है

जिसमें १८१ प्रश्नोत्तर सहित ६७ श्लोक है।

उसमें भी प्रथम और अंतिम श्लोक की रचना

उनके शिष्यों की है ।

प्रश्नोत्तर के रूपमें यह रचना

हमारे जीवन एवं वैदिक धर्म के

सनातन मूल्यों को प्रस्तुत करती है,

जो देश, काल एवं परिस्थिति से परे है ।

जीवन के कठिन मार्ग पर चलते हुए

ये सभी सिद्धांत हमें सही पथ दिखाते हुए

हमारा जीवन उन्नत करते हैं ।

श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी को कोटि कोटि वंदन!

॥ १ ॥

कः खलु नालंक्रियते दृष्टादृष्टार्थसाधनपटीयान् ।
अमुया कण्ठस्थितया प्रश्नोत्तररत्नमालिकया ॥

जीवन के दृश्य एवं अदृश्य ध्येय को पाने के लिए आवश्यक ऐसी यह प्रश्नोत्तर रत्न मालिका को पहन के (याद कर के) कौन खुद को अलंकृत नहीं करना चाहेगा ?

॥ २ ॥ १, २, ३ ॥

भगवन् किमुपादेयं? – गुरुवचनम् ।

हेयमपि किम्? - अकार्यम् ।

को गुरुः

- अधिगततत्त्वः शिष्यहितायोद्यतः सततम् ।

क्या स्वीकार्य है ? – गुरु के वचन (शिक्षा) ।

क्या त्याज्य है ? – जो धर्म के विरुद्ध है ।

गुरु कौन है ?

– जिसने सत्य को पा लिया है और जो सदैव अपने शिष्य के लिए सही सोचता है ।

॥ ३ ॥ ४, ५ ॥

त्वरितं किं कर्तव्यं विदुषाम्?

- संसारसन्ततिच्छेदः ।

किं मोक्षतरोः बीजम्?

- सम्यग्ज्ञानं क्रियासिद्धम् ।

समजदार व्यक्ति को कौन सी बात त्वरित करनी चाहिए ?

– जन्म मृत्यु के चक्र का छेदन ।

मोक्ष के वृक्ष का बीज क्या है ?

– आचरण में लाया हुआ सही ज्ञान ।

॥ ४ ॥ ६, ७, ८, ९ ॥

कः पथ्यतरः? – धर्मः ।

कः शुचिः इहः? - यस्य मानसं शुद्धम् ।

कः पण्डितः? – विवेकी ।

किं विषम्? - अवधीरणा गुरुषु ।

सबसे श्रेष्ठ हितकारक क्या है ? – धर्म ।

सबसे शुद्ध (व्यक्ति) कौन है ?

– जिसका मन शुद्ध है वह ।

समजदार कौन है ?

– जो विवेकी है । (जो सही-गलत, धर्म-अधर्म, शाश्वत-नश्वर का भेद पहचानता है ।)

विष क्या है ? – बड़ों की आज्ञा की अवज्ञा ।

॥ ५ ॥ १०, ११ ॥

किं संसारे सारम्?

- बहुशोऽपि चिन्त्यमानं इदमेव ।

किं मनुजेषु इष्टतमम्?

– स्वपरहिताय उद्यतं जन्म ।

संसार का सार क्या है ?

– उस तत्व के लिए निरंतर चिंतन करना ।

मनुष्य के लिए इष्ट क्या है ? – खुदके और दूसरोंके लिए जीवन समर्पित करना ।

॥ ६ ॥ १२, १३, १४, १५ ॥

मदिरेव मोहजनकः कः? – स्नेहः ।

के च दस्यवः? - विषयाः ।

का भववल्ली? – तृष्णा ।

को वैरी? – यस्तु अनुद्योगः ।

मदिरा की तरह कैफ़ी (भ्रामक) क्या है ?

– स्नेह ।

चोर कौन है ? – विषय (इन्द्रिय सुख) ।

जन्म का कारण क्या है ? – तृष्णा (इच्छा) ।

शत्रु कौन है ? – आलस, प्रमाद ।

॥ ७ ॥ १६, १७, १८ ॥

कस्मात् भयं इह? – मरणात् ।

अन्धात् इह को विशिष्यते? – रागी ।

कः शूरः?

- यः ललना लोचन बाणैः न च व्यधितः ।

भय किससे है ? – मृत्यु से ।

अंधे से भी बुरा (व्यक्ति) कौन है ?

– रागी (इच्छाओं में फंसा हुआ)

शूर कौन है ?

– सुंदर स्त्री की नज़रों के बाणों से व्यथित न होने वाला ।

॥ ८ ॥ १९, २० ॥

पातुं कर्णाञ्जलिभिः किं अमृतं इह युज्यते?

- सदुपदेशः।

किं गुरुताया मूलम्? – यत् एतत् अप्रार्थनं नाम ।

वह क्या है,

जो अमृत की तरह कानों से पीया जाए ?

– सही उपदेश ।

महानता का मूल क्या है ?

– किसीसे कुछ भी याचना न करना ।

॥ ९ ॥ २१, २२, २३, २४ ॥

किं गहनम्? – स्त्रीचरितम् ।

कः चतुरः? - यो न खण्डितः तेन ।

किं दु:खम्? - असंतोषः ।

किं लाघवम्? - अधमतो याच्ञा ।

गहन क्या है ? – स्त्री का चरित्र ।

चतुर कौन है ?

– स्त्री का चरित्र जिसे जीत नहीं पाता वह ।

दुःख क्या है ? – असंतोष ।

लघुता क्या है ?

– अधम (नीच) व्यक्ति से याचना करना ।

॥ १० ॥ २५, २६, २७, २८ ॥

किं जीवितम्? – अनवद्यम् ।

किं जाड्यम्? – पाठतोऽपि अनभ्यासः।

को जागर्ति? – विवेकी ।

का निद्रा? - मूढता जन्तोः ।

जीवित कौन है ? – जो निष्कलंक है ।

मूर्खता क्या है ? – जो सीखा हुआ है, उसका अभ्यास न करना ।

जागृत कौन है ?

- जो विवेकी है । (जो सही-गलत, धर्म-अधर्म, शाश्वत-नश्वर का भेद पहचानता है ।)

निद्रा क्या है ? – मनुष्य की अज्ञानता ।

॥ ११ ॥ २९, ३० ॥

नलिनी दल गत जलवत् तरलं किम्?

- यौवनं धनं च आयुः।

कथय पुनः के शशिनः किरणसमाः?

- सज्जना एव ।

कमल के पत्ते पे गिरि हुई पानी की बूंद के सामान क्षणिक क्या है ?

– यौवन, धन और आयु ।

चन्द्र के किरणों के सामान कौन है ?

– सज्जन व्यक्ति ।

॥ १२ ॥ ३१, ३२, ३३, ३४ ॥

को नरकः? – परवशता ।

किं सौख्यम्? – सर्वसङ्ग विरतिः या ।

किं साध्यम्? – भूतहितम् ।

प्रियं च किं प्राणिनाम्? – असवः ।

नरक क्या है ? – दूसरों के वश में रहना ।

सुख क्या है ?

– सभी प्रकार के लगाव से मुक्ति ।

प्राप्त करने योग्य क्या है ?

– प्राणीमात्र का हित ।

प्राणीमात्र को प्रिय क्या है ?

– खुद की ज़िंदगी ।

॥ १३ ॥ ३५, ३६, ३७ ॥

को अनर्थफलः? – मानः ।

का सुखदा? - साधुजनमैत्री ।

सर्वव्यसन विनाशे को दक्षः? - सर्वदा त्यागी ।

किसका परिणाम दुर्गति है ? – मान का ।

सुखदायक क्या है ? – सज्जनों से मैत्री ।

सभी प्रकार के दुखों को नाश करने के लिए

सक्षम कौन है ? – जो सदैव त्यागी है वह ।

॥ १४ ॥ ३८, ३९, ४० ॥

किं मरणम्? – मूर्खत्वम् ।

किं च अनर्घम्? - यदवसरे दत्तम् ।

आमरणात् किं शल्यम्?

- प्रच्छन्नं यत् कृतं पापम् ।

मृत्यु क्या है ? – मूर्खता ।

अमूल्य क्या है ?

– जो सही समय पर दिया गया है वह ।

क्या है जो ज़िंदगीभर कांटे की तरह चुभता है?

– छिपकर किया हुआ पाप ।

॥ १५ ॥ ४१, ४२ ॥

कुत्र विधेयो यत्नः?

- विद्याभ्यासे सदौषधे दाने ।

अवधीरणा क्व कार्या?

- खलु परयोषितु परधनेषु ।

प्रयत्न किसके लिए होना चाहिए ?

– विद्याप्राप्ति, औषधि की खोज और दान के लिए ।

किसकी उपेक्षा करनी चाहिए ? – दुर्जनों की, दूसरों की पत्नी और दूसरों के धन की ।

॥ १६ ॥ ४३, ४४ ॥

को अहर्निशं अनुचिन्त्या?

– संसार असारता, न तु प्रमदा ।

का प्रेयसी विधेया?

- करुणा दीनेषु सज्जने मैत्री ।

दिन-रात क्या सोचते रहना चाहिए ?

– संसार की क्षणिकता, नहीं की स्त्री की सुंदरता ।

प्यार के लिए विषयवस्तु क्या होनी चाहिए ?

– दीन व्यक्ति के प्रति करुणा, और सज्जनों से मैत्री ।

॥ १७ ॥ ४५ ॥

कण्ठगतैरपि असुभिः कस्य हि आत्मा न शक्यते जेतुम्?

- मूर्खस्य शङ्कितस्य च विषादिनो वा कृतघ्नस्य ।

मृत्यु के समय भी किस व्यक्ति को सही रस्ते पे नहीं लाया जा सकता ?

- मूर्ख, शंकाशील, निरानंद (उदास) और कृतघ्नी व्यक्ति को ।

॥ १८ ॥ ४६, ४७, ४८ ॥

कः साधुः? - सद्वृत्तः ।

कं अधमं आचक्षते? - तु असद्वृत्तं ।

केन जितं जगदेतत्?

– सत्य तितिक्षावता पुंसा ।

सज्जन कौन है ? – जिसकी वृत्ति शुद्ध है ।

अधम (नीच) किसे कहा जाए ?

– जिसकी वृत्ति अशुद्ध है ।

विश्व को कौन जीत सकता है ? – जिसके पास सत्य और सहनशीलता (धैर्य) है ।

॥ १९ ॥ ४९, ५० ॥

कस्मै नमांसि देवाः कुर्वन्ति? – दयाप्रधानाय ।

कस्मात् उद्वेगः स्यात्?

– संसार अरण्यतः सुधियः ।

देवता किसको नमन करते हैं ?

– जिसका प्रमुख गुण दया है ।

उद्वेग किससे निर्माण होता है ?

– संसाररूपी जंगल उद्वेग निर्माण करता है ।

॥ २० ॥ ५१, ५२ ॥

कस्य वशे प्राणिगणः?

- सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य ।

क्व स्थातव्यम्?

- न्याय्ये पथि दृष्ट अदृष्ट लाभाढ्ये ।

जीवमात्र को कौन वश कर सकता है ?

– जिसकी वाणी सत्य और प्रिय है तथा जो विनम्र है ।

व्यक्ति को कहाँ स्थिर होना चाहिए ?

– इस विश्व में और उसके परे जो लाभदायी है, ऐसे सच्चे पथ पर ।

॥ २१ ॥ ५३, ५४, ५५ ॥

को अन्धः? – यो अकार्यरतः ।

को बधिरः? - यो हितानि न शृणोति ।

को मूकः?

- यो काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति ।

अंधा कौन है ? – जो बुरे कर्मों में लिप्त है ।

बहरा कौन है ?

– जो अपने हित की बातें नहीं सुनता ।

मूक कौन है ?

– सही समय पर जो सही बात नहीं बोलता ।

॥ २२ ॥ ५६, ५७, ५८, ५९ ॥

किं दानम्? – अनाकाङ्क्षम् ।

किं मित्रम्? - यो निवारयति पापात् ।

को अलंकारः? – शीलम् ।

किं वाचां मण्डनम्? - सत्यम् ।

दान क्या है ?

– जो बिना किसी अपेक्षा से किया है ।

मित्र कौन है ? – जो पाप से बचाता है ।

अलंकर क्या है ? – अच्छा चरित्र ।

वाणी को कौन सजाता है ? – सत्य ।

॥ २३ ॥ ६०, ६१ ॥

विद्युद्विलसितचपलं किम्?

– दुर्जनसंगतिः युवतयश्च ।

कुलशीलनिष्प्रकंपाः के कलिकाले अपि?

- सज्जना एव ।

बिजली के सामान क्षणिक क्या है ?

– दुर्जन का संग और युवती ।

कलियुग में भी कौन अपने अच्छे चरित्र से विचलित नहीं होता ? – सिर्फ सज्जन व्यक्ति ।

॥ २४ ॥ ६२, ६३ ॥

चिन्तामणिरिव दुर्लभं इह किम्?

– कथयामि तत् । चतुर्भद्रम् ।

किं तद्वदन्ति भूयो विधूततमसो विशेषेण?

चिंतामणि के सामान दुर्लभ क्या है ?

– चार बातें, जो मैं कह रहा हूँ ।

प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा मार्गदर्शित

वह बातें क्या है?

॥ २५ ॥ ६३ ॥

दानं प्रियवाक् सहितं, ज्ञानं अगर्वं,

क्षमान्वितं शौर्यम् ।

वित्तं त्यागसमेतं दुर्लभमेतत् चतुर्भद्रम् ।

मीठी वाणी के साथ किया हुआ दान,

गर्व रहित ज्ञान,

क्षमा सहित शौर्य

और संपत्ति की ओर त्याग (उदारता) की दृष्टि –

यह चार बातें दुर्लभ है ।

|| २६ || ६४, ६५, ६६ ||

किं शोच्यम्? - कार्पण्यम् ।

सति विभवे किं प्रशस्तम्? - औदार्यम् ।

कः पूज्यः विद्वद्भिः?

- स्वभावतः सर्वदा विनीतो यः ।

शोक करने लायक क्या है ? – कार्पण्य (जिसने संपत्ति का ना ही उपभोग किया, ना ही दान) ।

समृद्ध होने पर कौन पूज्य है ?

– जिसके पास औदार्य (उदारता) है ।

ज्ञानियों द्वारा कौन पूज्य है ?

– जो स्वाभाव से सदैव विनम्र है ।

॥ २७ ॥ ६७, ६८ ॥

कः कुलकमलदिनेशः?

- सति गुणविभवेऽपि यो नम्रः ।

कस्य वशे जगदेतत्?

– प्रियहित वचनस्य धर्मनिरतस्य ।

कमल रूपी कुल (कुटुंब) को खिलनेवाला सूर्य कौन है ? – सर्वगुण संपन्न होने के बावजूद जो विनम्र है ।

विश्व किसके वशमें है ? – जिसकी वाणी मधुर, हितकारक है और जो धर्मपरायण है ।

॥ २८ ॥ ६९, ७० ॥

विद्वन्मनोहरा का?

- सत्कविता बोधवनिता च ।

कं न स्पृशति विपत्तिः?

- प्रवृद्धवचनानुवर्तिनं दान्तं ।

क्या विद्वानों को मोहित करता है ? – उन्नत करती हुई कविता और ज्ञान रुपी स्त्री ।

विपत्ति किसे स्पर्श नहीं कर सकती ? – जो बड़ों की आज्ञा को अनुसरता है और संयमी है ।

॥ २९ ॥ ७१, ७२ ॥

कस्मै स्पृहयति कमला? – तु अनलसचित्ताय
नीतिवृत्ताय ।
त्यजति च कं सहसा? – द्विज गुरु सुर
निन्दाकरं च सालस्यम् ।

देवी लक्ष्मी को कौन पसंद है ?

– जिसका मन आलसी नहीं है तथा जिसका आचरण और चरित्र शुद्ध है ।

और वह तत्क्षण किसका त्याग करती है ?

– जो ब्राह्मण, गुरुजन (बुज़ुर्गों) एवं देवों की निंदा करता है, और जो आलसी है ।

॥ ३० ॥ ७३, ७४ ॥

कुत्र विधेयो वासः?

- सज्जननिकटे अथवा काश्याम् ।

कः परिहार्यो देशः? - पिशुनयुतो लुब्धभूपश्च ।

व्यक्ति को कहाँ रहना चाहिए ?

– सज्जनों के समीप या काशी में ।

किस जगह को छोड़ना चाहिए ? – जहाँ के लोग नीच है एवं राजा लालची और कंजूस है ।

॥ ३१ ॥ ७५, ७६ ॥

केन अशोच्यः पुरुषः?

- प्रणतकलत्रेण धीरविभवेन ।

इह भुवने को शोच्यः?

– सत्यपिविभवे न यो दाता ।

क्या व्यक्ति को शोकमुक्त करता है ?

– आज्ञाकारी पत्नी और स्थायी समृद्धि ।

विश्व में क्या शोक करने जैसा है ?

– समृद्ध होते हुए भी जो दान नहीं करता है ।

॥ ३२ ॥ ७७, ७८ ॥

किं लघुतायाः मूलम्? – प्राकृतपुरुषेषु याच्ञा ।

रामादपि कः शूरः?

- स्मरशरनिहतो न यः चलति ।

मानहानि (उपहास) का कारण क्या है ?

– नीच व्यक्ति से मांगना ।

राम से भी बहादुर कौन है ? – कामदेव के बाणों से जिसका मन चालित नहीं होता है ।

॥ ३३ ॥ ७९, ८० ॥

किं अहर्निशं अनुचिन्त्यम्?

– भगवच्चरणम् न संसारः ।

चक्षुष्मन्तोऽपि अन्धाः के स्युः?

- ये नास्तिका मनुजाः ।

दिन रात किसका चिंतन करना चाहिए ? – प्रभु के चरणों का, नहीं कि सांसारिक जीवन का । आँखे होने के बावजूद अँधा कौन है ? – जो ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानता है और जो वेदों की निंदा करता है ।

॥ ३४ ॥ ८१, ८२ ॥

कः पङ्गु इह प्रथितः?

- व्रजति च यो वार्द्धके तीर्थम् ।

किं तीर्थमपि च मुख्यम्?

- चित्तमलं यन्निवर्तयति ।

अपंग कौन है ?

– जो बूढा होने के बाद तीर्थयात्रा करता है ।

महत्वपूर्ण तीर्थ कौन सा है ? – जो मन की अशुद्धि (बुरी वासनाओं) को दूर करे ।

॥ ३५ ॥ ८३, ८४ ॥

किं स्मर्तव्यं पुरुषैः?

- हरिनाम सदा, न यावनी भाषा ।

को हि न वाच्यः सुधिया?

– परदोषश्च अनृतं तद्वत् ।

क्या सदैव याद रखना चाहिए ? – हरि का नाम, नहीं कि हीन व्यक्तियों की भाषा ।

सज्जनों के लिए अनिर्वचनीय क्या है ? – दूसरों के दोष एवं असत्य ।

॥ ३६ ॥ ८५, ८६, ८७ ॥

किं सम्पाद्यं मनुजैः?

 – विद्या वित्तं बलं यशः पुण्यम् ।

कः सर्वगुणविनाशी? – लोभः ।

शत्रुश्च कः? – कामः ।

व्यक्ति को किसका उपार्जन करना चाहिए ?

 – विद्या, वित्त, बल, यश और पुण्य ।

सभी सद्गुणों को कौन नाश करता है ?

 – लोभ ।

शत्रु कौन है ? – काम (वासना) ।

॥ ३७ ॥ ८८, ८९ ॥

का च सभा परिहार्या? - हीना या वृद्धसचिवेन ।
इह कुत्र अवहितः स्यात् मनुजः?
- किल राजसेवायाम् ।

कौन सी सभा का त्याग करना चाहिए ?
– जिसमें कोई अनुभवी सचिव नहीं है ।
व्यक्ति को किस में सतर्क रहना चाहिए ?
– राजा की सेवा करने में ।

॥ ३८ ॥ ९०, ९१ ॥

प्राणादपि को रम्यः? - कुलधर्मः साधुसंगश्च ।
का संरक्ष्या? - कीर्तिः पतिव्रता नैज बुद्धिश्च ।

प्राण से भी प्यारा क्या है ? – परंपरागत धर्म का पालन एवं सज्जनों की संगति ।
किसका संरक्षण करना चाहिए ? – कीर्ति, पतिव्रता स्त्री और अपनी विवेकपूर्ण बुद्धि का ।

॥ ३९ ॥ ९२, ९३ ॥

का कल्पलता लोके?

– सच्छिष्याय अर्पिता विद्या ।

को अक्षयवटवृक्षः स्यात्?

- विधिवत् सत्पात्रदत्त दानं यत् ।

इच्छापूर्ती करनेवाली लता कौन सी है ?

– सुपात्र शिष्य को दी हुई विद्या ।

क्षय न होनेवाला वृक्ष कौन सा है ?

– सुपात्र व्यक्ति को नियमानुसार दिया हुआ दान ।

॥ ४० ॥ ९४, ९५, ९६, ९७ ॥

किं शस्त्रं सर्वेषाम् ? - युक्तिः ।

माता च का? - धेनुः ।

किं नु बलम्? – यद्धैर्यम् ।

को मृत्युः? – यत् अवदानरहितत्वम् ।

सभी के लिए शस्त्र क्या है ? – युक्ति ।

माता कौन है ? – गाय ।

बल क्या है ? – साहस ।

मृत्यु क्या है ? – असावधानी (लापरवाही) ।

॥ ४१ ॥ ९८, ९९, १००, १०१ ॥

कुत्र विषम्? - दुष्टजने ।

किमिह आशौचं भवेत्? - ऋणं नृणाम् ।

किं अभयं इह? – वैराग्यम् ।

भयमपि किम्? - वित्तमेव सर्वेषाम् ।

विष कहाँ है ? – दुर्जनों के पास ।

कलंक (अपावित्र्य) क्या है ?

– किसीका ऋणी रहना ।

अभय किससे प्राप्त होता है ?

– वैराग्य (दुन्यवी चीजों के अलगाव) से ।

भय क्या है ? – संपत्ति ।

॥ ४२ ॥ १०२, १०३, १०४ ॥

का दुर्लभा नराणाम्? – हरिभक्तिः ।

पातकं च किम्? – हिंसा ।

को हि भगवत्प्रियः स्यात्?

- योऽन्यं न उद्वेजयेत् अनुद्विग्नः ।

क्या पाना मनुष्य के लिए दुर्लभ है ?

– हरि भक्ति ।

पातक (पाप) क्या है ? – हिंसा (किसी भी सजीवको शारीरिक या मानसिक पीड़ा देना) ।

कौन भगवान को प्रिय है ?

– जो दूसरों को उद्विग्न नहीं करता एवं खुद भी उद्विग्न नहीं होता ।

॥ ४३ ॥ १०५, १०६, १०७, १०८ ॥

कस्मात् सिद्धिः? – तपसः ।

बुद्धिः क्व नु? – भूसुरे ।

कुतो बुद्धिः? – वृद्धोपसेवया ।

के वृद्धाः? - ये धर्मतत्त्वज्ञाः ।

सिद्धि किससे मिलती है ? – तप से ।

बुद्धि कहाँ है ? – ब्राह्मण में ।

बुद्धि कैसे मिलती है ? – वृद्धों की सेवा से ।

वृद्ध कौन है ? – जो धर्म और सत्य जानते हैं ।

॥ ४४ ॥ १०९, ११०, १११ ॥

संभावितस्य मरणात् अधिकं किम्?

- दुर्यशो भवति।

लोके सुखी भवेत् कः? – धनवान् ।

धनमपि च किम्? – यतश्चेष्टम् ।

प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए मृत्यु से भी बुरा क्या है? – अपयश (बदनामी) ।

विश्व में सुखी कौन है ? – जो धनवान है ।

धन क्या है ? – जिससे इच्छापूर्ती होती है ।

॥ ४५ ॥ ११२, ११३, ११४ ॥

सर्वसुखानां बीजं किम्? – पुण्यम् ।

दु:खमपि कुतः? – पापात् ।

कस्य ऐश्वर्यं?

– यः किल शंकरं आराधयेत् भक्त्या ।

सभी सुखों का बीज क्या है ? – पुण्य ।

और दुखों का ? – पाप ।

अधिपत्य किसका हो सकता है ?

– जो भक्तहृदय से भगवान शंकर की आराधना करता है ।

॥ ४६ ॥ ११५, ११६, ११७ ॥

को वर्धते? - विनीतः ।

को वा हीयते? - यो दृप्तः ।

को न प्रत्येतव्यः? - ब्रूते यश्च अनृतं शश्वत् ।

वृद्धि किसकी होती है ? – जो विनम्र है ।

अधःपतित कौन होता है ? – दंभी व्यक्ति ।

कौन विश्वासपात्र नहीं है ?

– जो सदैव असत्य कहता है ।

॥ ४७ ॥ ११८, ११९ ॥

कुत्र अनृतेऽपि अपापम्?

- यच्चोक्तं धर्मरक्षार्थम् ।

को धर्मः?

– अभिमतो यः शिष्टानां निजकुलीनानाम् ।

कब असत्य भी पातक नहीं रहता ?

– जब धर्म रक्षणार्थ कहा गया हो ।

धर्म क्या है ?

– कुल के महान एवं पवित्र पूर्वजों द्वारा स्वीकृत शिष्टाचार और नैतिक मूल्य ।

॥ ४८ ॥ १२०, १२१, १२२, १२३ ॥

साधुबलं किम्? – दैवम् ।

कः साधुः? - सर्वदा तुष्टः ।

दैवं किम्? – यत् सुकृतम् ।

कः सुकृती? – श्लाघ्यते च य सद्भिः ।

सज्जनों का बल क्या है ? – प्रारब्ध ।

सज्जन कौन है ? – जो सदैव संतुष्ट है ।

प्रारब्ध क्या है ? – सत्कर्म ।

सुकृती (सत्कर्म करनेवाला) कौन है ?

– गुणीजन जिसकी प्रशंसा करते हैं वह ।

॥ ४९ ॥ १२४, १२५, १२६ ॥

गृहमेधिनश्च मित्रं किम्? – भार्या ।

को गृही च? - यो यजते ।

को यज्ञः?

- यः श्रुत्या विहितः श्रेयस्करो नृणाम् ।

गृहस्थ का मित्र कौन है ? – पत्नी ।

गृहस्थ कौन है ? – जो यज्ञ करता है ।

यज्ञ क्या है ? – जो वेदों में कहा गया है और जो मानवता के लिए हितकारक है ।

॥ ५० ॥ १२७, १२८, १२९ ॥

कस्य क्रिया हि सफला?

- यः पुनः आचारवान् शिष्टः ।

कः शिष्टः? - यो वेदप्रमाणवान् ।

को हतः? – क्रियाभ्रष्टः ।

किसका कर्म फलप्रद है ?

– जिसका आचरण शुद्ध है और जो शिष्ट है ।

शिष्ट कौन है ?

– जो वेद को प्रमाण मानता है ।

कौन मृत्यु को प्राप्त होता है ?

– स्वधर्म को भूला हुआ ।

॥ ५१ ॥ १३०, १३१, १३२, १३३ ॥

को धन्यः? - संन्यासी ।

को मान्यः? - पण्डितः साधुः ।

कः सेव्यः? - यो दाता ।

को दाता? – यो अर्थतृप्तिम् आतनुते ।

धन्य (जीवन के उच्चतम ध्येय को प्राप्त करनेवाला) कौन है ? – संन्यासी (संसार में जकड़ी हुई बेड़ी को जिसने तोड़ दिया है) ।

सम्माननीय (आदरपात्र) कौन है ?

– जो ज्ञानी एवं सरल है ।

पूजनीय कौन है ? – जो दाता है ।

दाता कौन है ?

– ज़रूरतमंद को संतुष्ट करनेवाला ।

॥ ५२ ॥ १३४, १३५, १३६, १३७ ॥

किं भाग्यं देहवताम्? – आरोग्यम् ।

कः फली? – कृषिकृत् ।

कस्य न पापम्? – जपतः ।

कः पूर्णः? - यः प्रजावान् स्यात् ।

देहधारी के लिए आशिष (भाग्य) क्या है ?

– आरोग्य ।

फल का आनंद कौन लेता है ?

– जो बोता है (प्रयत्नशील है) ।

निष्पाप कौन है ?

– जो जप करता है (निरंतर मननशील) ।

पूर्ण कौन है ? – जिनकी संतान है ।

॥ ५३ ॥ १३८, १३९ ॥

किं दुष्करं नराणाम्?

– यन्मनसो निग्रहः सततम् ।

को ब्रह्मचर्यवान् स्यात्?

– यश्च अस्खलित ऊर्ध्वरेतस्कः ।

मनुष्यों के लिए कठिन क्या है ?

– मन का निरंतर नियंत्रण ।

ब्रह्मचारी कौन है ? – जिसने अपनी शक्ति का उदात्तीकरण किया है, नहीं कि व्यय ।

॥ ५४ ॥ १४०, १४१, १४२ ॥

का च परदेवता उक्ता? – चिच्छक्तिः ।

को जगत्भर्ता? – सूर्यः ।

सर्वेषां को जीवनहेतुः? - स पर्जन्यः ।

सर्वश्रेष्ठ देवी कौन है ?

– चेतनाशक्ति (माँ अम्बा) ।

जगत का संरक्षक कौन है ? – सूर्य ।

सभी के जीवन का स्रोत क्या है ? – बारिश ।

|| ५५ || १४३, १४४, १४५, १४६ ||

कः शूरः? - यो भीतत्राता ।

त्राता च कः? - स गुरुः ।

को हि जगद्गुरुरुक्तः? – शंभुः ।

ज्ञानं कुतः? – शिवादेव ।

शूर कौन है ? – जो भयभीत का रक्षक है ।

रक्षक कौन है ? – गुरु ।

जगद्गुरु कौन है ? – भगवान शिव ।

ज्ञान कहाँ से प्राप्त होता है ?

– भगवान शिव से ।

॥ ५६ ॥ १४७, १४८, १४९ ॥

मुक्तिं लभेत कस्मात्? – मुकुन्दभक्तेः ।
मुकुन्दः कः? – यस्तारयेत् अविद्याम् ।
का च अविद्या? – यत् आत्मनो अस्फूर्तिः ।

मुक्ति किससे प्राप्त होती है ?
– मुकुंद (विष्णु) भक्ति से ।
मुकुंद कौन है ? – अविद्या से तारनेवाला ।
अविद्या क्या है ? – खुदको न जानना ।

॥ ५७ ॥ १५०, १५१, १५२, १५३ ॥

कस्य न शोकः? - यः स्यात् अक्रोधः ।

किं सुखम्? – तुष्टिः ।

को राजा? – रञ्जनकृत्?

कश्च श्वा? - नीचसेवको यः स्यात् ।

कौन शोकरहित है ?

– कभी क्रोधित न होनेवाला ।

सुख क्या है ? – संतोष ।

राजा कौन है ? – दूसरों को खुश करनेवाला (जो विषयों को खुश करता है, न कि विषय उन्हें) ।

कुत्ता कौन है ?

– नीच व्यक्ति की सेवा करनेवाला ।

॥ ५८ ॥ १५४, १५५, १५६, १५७ ॥

को मायी? – परमेशः ।

कः इन्द्रजालायते? - प्रपञ्चोऽयं ।

कः स्वप्ननिभः? – जाग्रत् व्यवहारः ।

सत्यमपि च किम्? – ब्रह्म ।

माया का रचयिता कौन है ?

– सर्वोत्तम ईश्वर ।

इन्द्रजाल (सर्वश्रेष्ठ दैवी जादू) क्या है ?

– यह सम्पूर्ण जगत ।

स्वप्नवत् क्या है ?

– जागृत अवस्था में जो कुछ भी हो रहा है ।

सत्य क्या है ? – ब्रह्म ।

॥ ५९ ॥ १५८, १५९, १६०, १६१ ॥

किं मिथ्या? – यद्विद्यानाश्यं ।

तुच्छं तु? – शशविषाणादि ।

का च अनिर्वचनीया? – माया ।

किं कल्पितम्? – द्वैतम् ।

मिथ्या (भ्रम) क्या है ?

– सही ज्ञान के प्रकाश से जो नाश होता है ।

तुच्छ क्या है ? – खरगोश के सींग जैसी चीजें, जिनका अस्तित्व ही नहीं है ।

अवर्णनीय क्या है ? – माया ।

कल्पनीय क्या है ?

– द्वैतवाद (जीव और शिव का अलगाव) ।

॥ ६० ॥ १६२, १६३, १६४, १६५ ॥

किं पारमार्थिकं स्यात्? – अद्वैतम् ।
च अज्ञता कुतः? – अनादिः ।
वपुषश्च पोषकं किम्? – प्रारब्धम् ।
च अन्नदायि किम्? – च आयुः ।

सर्वोत्तम सत्य क्या है ? – अद्वैत ।
यह अज्ञानता कब से है ? – अनादि से ।
शरीर का पोषक क्या है ? – प्रारब्ध (पूर्व कर्म जिनके फल मिलने शुरू हुए है) ।
अन्न कौन देता है ? – आयुष्य ।

॥ ६१ ॥ १६६, १६७ ॥

को ब्राह्मणैः उपास्यः?

– गायत्रि अर्क अग्नि गोचरः शंभुः ।

गायत्र्यां आदित्ये च अग्नौ शम्भौ च किं नु?

– तत् तत्वम् ।

ब्राह्मण को किसकी पूजा करनी चाहिए ?

– गायत्री, ऊरी और अग्निमें जो व्याप्त है ऐसे शिवजी की ।

गायत्री, सूर्य, अग्नि और शिव में क्या है ?

– परम सत्य ।

॥ ६२ ॥ १६८, १६९ ॥

प्रत्यक्षदेवता का? – माता ।

पूज्यो गुरुश्च कः? – तातः ।

कः सर्वदेवतात्मा? – विद्या कर्मान्वितो विप्रः ।

प्रत्यक्ष देवता कौन है ? – माता ।

पूजनीय एवं गुरु कौन है ? – पिता ।

सभी देवता कहाँ स्थित है ?

– ज्ञानी और कर्मनिष्ठ ब्राह्मण में ।

॥ ६३ ॥ १७०, १७१ ॥

कश्च कुलक्षयहेतुः?

- संतापः सज्जनेषु यो अकारि।

केषां अमोघवचनम्?

- ये च पुनः सत्य मौन शम शीलाः ।

वंश के पतन का कारण क्या है ?

– सज्जनों को संताप देनेवाले कर्म ।

किसके शब्द विफल नहीं होते ?

– जिसमें सत्य है, मौन (वाणी पर नियंत्रण) है और मन नियंत्रित है ।

॥ ६४ ॥ १७२, १७३, १७४, १७५ ॥

किं जन्म? - विषयसंगः ।

किं उत्तरं जन्म? - पुत्रः स्यात् ।

को अपरिहार्यः? – मृत्युः ।

कुत्र पदं विन्यसेच्च? – दृक्पूते ।

जन्म का कारण क्या है ?

– विषयों से आसक्ति ।

आगामी जन्म क्या है ? – पुत्र ।

अनिवार्य क्या है ? – मृत्यु ।

व्यक्ति को कहाँ पैर रखना चाहिए ?

– जहाँ अच्छाई मालूम हो ।

॥ ६५ ॥ १७६, १७७, १७८ ॥

पात्रं किं अन्नदाने? – क्षुधितम् ।

को अर्च्यो हि? – भगवद् अवतारः ।

कश्च भगवान्? - महेशः शंकरनारायणात्मैकः ।

कौन अन्नदान के पात्र है ? – जो भूखा है ।

कौन पूजनीय है ? – भगवन के अवतार ।

भगवान कौन है ? – वह परमेश्वर जिसमें शिव और नारायण व्याप्त (एक) है ।

॥ ६६ ॥ १७९, १८०, १८१ ॥

फलमपि भगवद्भक्तेः किम्?

– तल्लोक स्वरूप साक्षात्वम् ।

मोक्षश्च कः? – हि अविद्या अस्तमयः ।

कः सर्ववेदभूः? – अथ च ॐ ।

भगवद् भक्ति का फल क्या है ?

– भगवद् तत्व की अनुभूति एवं स्व-स्वरूप की पहचान ।

मोक्ष (मुक्ति) क्या है ?

– अज्ञान से मुक्ति (अविद्या का अंत) ।

वेदों का उद्भवस्थान क्या है ? – ॐ ।

॥ ६७ ॥

इत्येषा कण्ठस्था

प्रश्नोत्तररत्नमालिका येषां ।

ते मुक्ताभरणा इव

विमलाश्चाभान्ति सत्समाजेषु ॥

प्रश्नोत्तर रत्न मालिका स्वरूप

इस रत्नों की माला को जो कोई भी

अपने गलेमें पहनता है

(इसे मनमें याद कर लेता है),

वह महान-सज्जनों की सभा में

रोशन होता है (प्रशस्ति पता है) ।

॥ इति श्रीमद् शङ्कराचार्यविरचिता प्रश्नोत्तररत्नमालिका समाप्ता ॥